श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांग रागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय
तस्मै न काराय नमः शिवायः॥ (1)

मंदाकिनी सलिल चंदन चर्चिताय
नंदीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मंदारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै म काराय नमः शिवायः॥ (2)

शिवाय गौरी वदनाब्जवृंद
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्री नीलकंठाय वृषभद्धजाय
तस्मै शि काराय नमः शिवायः॥ (3)

वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य
मुनींद्र देवार्चित शेखराय।
चंद्रार्क वैश्वानर लोचनाय
तस्मै व काराय नमः शिवायः॥ (4)

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय
तस्मै य काराय नमः शिवायः॥ (5)

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः, पठेत् शिव सन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति, शिवेन सह मोदते॥

॥इति श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शिव पंचाक्षर स्तोत्र का हिंदी में अर्थ

जिनके कंठ मे साँपोंका हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अंगराग है (अनुलेपन) है, दिशाँए ही जिनके वस्त्र हैं,
शिव के उस अविनाशी महेश्वर “न” कार स्वरूप को नमस्कार है।

गंगा की धारा द्वारा जो शोभायमान है, जो चन्दन से अलंकृत है, मन्दार पुष्प तथा अन्यान्य पुष्पों से जिनकी सुंदर पूजा हुई है,
उन नन्दी के अधिपति और प्रमथ (प्रमथ अर्थात शिव के गण अथवा पारिषद) के स्वामी,
शिव के उस महेश्वर “म” कार स्वरूप को, नमस्कार है।

जो कल्याण स्वरूप हैं, पार्वती जी के मुख कमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिये जो सूर्य स्वरूप हैं, जो राजा दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा मे बैलका चिन्ह है,
शिव के उस शोभाशाली, श्री नीलकण्ठ “शि” कार स्वरूप को, नमस्कार है।

वसिष्ठ, अगस्त्य, और गौतम आदि श्रेष्ठ ऋषि मुनियोंने तथा इन्द्र आदि देवताओंने जिन देवाधिदेव शंकरजी की पूजा की है।
चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र है,
शिव के उस “व” कार स्वरूप को, नमस्कार है।

जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ मे पिनाक (धनुष) है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, दिगम्बर अर्थात अम्बर को वस्त्र समान धारण करने वाले शिव के उस दिगम्बर देव “य” कार स्वरूप को, नमस्कार है।

जो शिवके समीप, इस पवित्र पंचाक्षर मंत्र का पाठ करता है, वह शिवलोकको प्राप्त होता है और
वहां शिवजी के साथ आनन्दित होता है।

R K Taneja - astrologer
@astrojankari